ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

12-12-2024

संगमयुग का विशेष वरदान सन्तुष्टता है, इस सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ हैं। असन्तुष्टता का बीज स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। आप ब्राह्मणों का गायन है -'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में", तो फिर असन्तुष्टता क्यों? जब वरदाता, दाता के भण्डार भरपूर हैं, इतनी बड़ी प्राप्ति है, फिर असन्तुष्टता क्यों?

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

The special blessing of the confluence age is contentment. The seed of this contentment is of all attainments. The seed of discontentment is a lack of physical or subtle attainment. The praise of you Brahmins is: Nothing is lacking in the treasure-store of you Brahmins or in the life of you Brahmins. So then, why is there discontentment? Since the treasure-store of the Bestower of Blessings is overflowing, and there is such great attainment, why is there discontentment?